मन का रोग

प्राचीन काल की बात है एक गांव के निकट एक सिद्ध संत रहते थे। उनके पास बहुत से श्रद्धालु आते थे। आस पास के सभी गांवों में यह मान्यता थी की उनके स्पर्श से असाध्य रोग भी दूर हो जाते हैं। सो उनके पास अनेक रुग्ण श्रद्धालु आते रहते थे।

एक दिन एक युवक उनके पास आया और उसने कहा, मुझे मन का रोग है, मेरा चित्त अशांत और मन व्याकुल रहता है।आप जिस प्रकार सभी के रोग दूर करते हैं, उसी प्रकार मेरा रोग भी दूर कीजिये।

संत ने युवक की बातें सुन उससे कहा, मन का रोग तो केवल तुम स्वयं ही दूर कर सकते हो, इसके लिए तुम ईश्वर की शरण में जाओ। मैं तो केवल शारीरिक रोग दूर करने का माध्यम मात्र हूँ, मन के भावनात्मक रोग तो ईश्वर के हाथ में होते हैं, इसके लिए तुम उनका आश्रय लो, वे तुम्हें तुम्हारी भक्ति का फल अवश्य देंगें।

**** प्रत्येक शुक्रवार को एक नई प्रेरक कथा पढ़िये।****

अधिक प्रेरक लघुकथाओं के लिए हमारा ऐप डाउनलोड करें : Vikram Samvant Hindu Calender